स्वयं बनें भाग्य निर्माता

--ब्र.कु. शोभिका, शांतिवन

यदि आप समस्याओं एवं परिस्थितियों के सामने अपने भाग्य का रोना सदा रोते रहते हैं कि मेरा तो भाग्य ही ऐसा है, मैंने तो कभी किसी का बुरा नहीं किया तो मेरे साथ ऐसा क्यों तो आपको स्मरण रखना चाहिए कि आज आप अपने जीवन में जो कुछ हैं उसके लिए स्वयं जिम्मेवार हैं। आपने अपने भाग्य को अपने हाथों से बनाया है। भले ही आज आपने कुछ गलत न किया हो पर पास्ट जन्म में आपने ऐसा कोई कर्म किया है जिसका फल आज आपको प्राप्त हो रहा है। आपके पास्ट ने ही आपके प्रेज़ेन्ट को बनाया है और आपका प्रेज़ेन्ट ही आपके फ्यूचर को बनाएगा। आपने जो कुछ कर्म भूतकाल में किया है, उसी का फल आज आपके सामने आ रहा है। यदि आप अपने वर्तमान कर्म को पॉज़ीटिव कर लें तो भविष्य अब भी आपके हाथों में है, इसलिए आने वाली मुसीबतों के लिए भाग्य को दोष मत दीजिए बल्कि सच्चाइयों का साहस से सामना कीजिए। अपने जीवन के प्रति स्वयं को जिम्मेवार समझना और यह अनुभव करना कि आपके विचार, शब्द और कर्म ही आपके भविष्य के आधार हैं, जीवन के दृष्टिकोण में एक मुख्य परिवर्तन ला सकता है।

भाग्य के गुलाम नहीं बनें

परमात्मा ने आपको वह शक्ति दी है जिसके द्वारा आप अपनी वर्तमान स्थिति में भी परिवर्तन और सुधार ला सकते हैं। आपको भाग्य का गुलाम बने रहने की जरूरत नहीं। अनेक परिस्थितियों के बावजूद भी सकारात्मक विचारों, दृढ़ निश्चय तथा इच्छा-शक्ति से किए गए प्रयत्नों द्वारा आप भाग्य की शक्तियों पर विजय पा सकते हैं। भाग्य के चक्र में खरीदे हुए एक गुलाम की तरह सदा चक्कर काटते रहना आवश्यक नहीं। आपमें इस चक्र से बाहर निकलने और इससे नियंत्रित होने के बजाय इसको ही नियंत्रित करने की शक्ति है। जैसे ही आप परमात्मा द्वारा प्रदान की गई बुद्धि का प्रयोग करना प्रारंभ करते हैं, आपके ऊपर भाग्य की पकड़ ढ़ीली होती जाती है। यही कारण है कि आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त व्यक्तियों को भाग्य का भय नहीं होता। वे एक ऐसे स्तर पर होते हैं, जहाँ संसार की वस्तुएं व परिस्थितियां उन्हें प्रभावित नहीं करती वरन वे स्वयं उन्हें प्रभावित करते हैं। वो भाग्य चक्र को बदलने का सामर्थ्य रखते हैं, जिससे परिस्थितियाँ निश्चित रूप से बदल जाती हैं। भाग्य लिखने की कलम उनके अपने हाथों में होती है और वे स्वयं अपने भाग्य के रचयिता होते हैं।

विपत्तियों के समय बनें दर्शक

जब एक बार आप अपने मन और बुद्धि का नियंत्रण पा लेते हैं तो भाग्य आपको प्रभावित नहीं करता। आप कमज़ोर मन वालों की तरह टूटने के बजाय शांतिपूर्वक उसका सामना कर सकते हैं। जीवन की परेशानियों एवं परिस्थितियों के प्रति आपकी सोच परिवर्तित हो जाती है। आप समस्याओं को गंभीरता से नहीं लेते और न ही उनका विरोध करते हैं, बल्कि आपमें उनका सामना करने का साहस आ जाता है। आप समझते हैं कि वे कुछ निश्चित समय के लिए आयी हैं और कुछ समय बाद चली जाएंगी। इस प्रकार उनसे अनासक्त और अलग रहकर आप इन विपत्तियों को एक दर्शक की तरह देखते हुए मानसिक रूप से स्थिर रहते हैं। यह केवल मन है, जो सब प्रकार की पीड़ाएं, निराशाएं, चिंताएं, परेशानियां और भय आदि अनुभव करता है। एक बार मन का नियंत्रण प्राप्त कर लेने पर ये सारी परिस्थितियां आप पर अपनी पकड़ ढ़ीली कर देती हैं और स्वयं को आपके चरणों में समर्पण कर देती हैं।

कठिनाइयों से लें लाभ

आपके जीवन में समस्याएं, कष्ट और पीड़ाएं आपको भयभीत करने के लिए नहीं आयी हैं बल्कि वास्तव में आपके व्यक्तित्व को विकसित और मजबूत करने के लिए उस क्षण उन्हीं पीड़ाओं तथा कष्टों की आवश्यकता है। वे हमारी परीक्षा और परख करने के लिए आई हैं। ऐसे अवसरों पर आपको उनका विरोध करने के बजाय कुछ क्षण शांति से स्वयं का निरीक्षण करना चाहिए और उनसे आवश्यक शिक्षा लेनी चाहिए। जीवन की प्रत्येक कठिनाई एवं समस्या हमें कुछ शिक्षा और लाभ देती है और हम उससे अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकते हैं। यह जीवन का एक आश्चर्यजनक नियम है। प्रत्येक संकट और कठिनाई में अपने आपसे सवाल करें कि यह समस्या मुझे क्या संदेश देती है तथा इससे मैं क्या लाभ उठा सकता हूं? समस्या का सामना करने के बाद आप स्वयं को पहले से अधिक बुद्धिमान और परिपक्व महसूस करेंगे।

सबकुछ अच्छाई के लिए

यदि आप कष्टों से घबरा कर अपने या दूसरे पर दोष लगाना शुरु कर देंगे तो उससे कर्म और फल का एक दूसरा साइकल बनने लगेगा व स्थिति पहले से अधिक बिगड़ने लगेगी। सदा यह याद रखें कि जीवन में जो भी आपके साथ घटित होता है वह केवल अच्छाई के लिए है। परमात्मा ने आपको ठीक उसी स्थान पर रखा है जिसके कि आप योग्य हैं। वास्तव में आपको अपना विकास करने के लिए या अपने कुछ कर्मों का संतुलन करने के लिए उस जगह की आवश्यकता है। कर्म का लॉ बिल्कुल क्लीयर है, हम जो कर्म करेंगे उसका फल हमें अवश्य मिलेगा इसलिए अपने कर्मों पर ध्यान दें। हम अपने पास्ट को नहीं बदल सकते लेकिन वर्तमान में अपमें कर्मों को बदलकर अपना भाग्य जैसा चाहें वैसा लिख सकते हैं।

समस्याएं विकास का साधन

सदैव स्मरण रखें कि हर बात का कोई न कोई कारण होता है। संयोग या दुर्घटना से कुछ भी घटित नहीं होता। पूरे विश्व में एक निश्चित व्यवस्था है और प्रत्येक वस्तु कर्म तथा फल के संबंध से बंधी हुई है। प्रत्येक फल की प्राप्ति किसी न किसी कर्म से होती है। इस समय आप जिन परिस्थितियों का सामना कर रहे हैं या जिस स्थिति से गुज़र रहे हैं उसका कारण यह है कि भूतकाल में आपने कुछ ऐसे कर्म किये हैं, जो अब फल के रूप में धीरे-धीरे आपके सामने आ रहे हैं। जैसे-जैसे आप वर्तमान में पॉज़ीटिव एनर्जी के साथ सही कर्म करते जायेंगे वैसे-वैसे पास्ट में किए गए कर्मों का हिसाब-किताब समाप्त होता जाएगा और आप सदा सुख की प्राप्ति कर सकेंगे। सभी समस्याओं को अपने विकास का साधन समझिए तथा पास्ट के कर्मों के हिसाब-किताब को जल्दी समाप्त करने के लिए सफलता-असफलता, लाभ-हानि, प्रशंसा-निंदा में अपने मन की स्थिति को एक जैसा रखिए। कोई घटना या प्रसंग इतना महत्वपूर्ण नहीं होता, जितना कि आपकी मानसिक प्रतिक्रिया क्योंकि आपकी मानसिक प्रतिक्रिया आपके कर्मों के निर्माण की आधारशिला बनती है। जो भी कर्म हम करते हैं उसका पहले संकल्प आता है, बाद में कर्म होता है तो आवश्यक है कि हम अपने संकल्पों की स्टेज पर ही अपनी चेकिंग करें और सकारात्मक सोच और सकारात्मक कर्मों का चुनाव करके अपना भविष्य खुद बनायें और और अपने भाग्य के रचयिता स्वयं बनें।

मेघालय। श्री.कृष्णकांत पॉल,गवर्नर के साथ समूह चित्र में ब्र.कु. सविता,माउण्ट आबू व ब्र.कु. नीलम।

कोटा। राजयोग शिविर का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. ज्योति, ब्र.कु. रेखा, बिज़नेसमैन विजयरतन तथा अन्य।

मुम्बई-खालेर। 'फ्री आई चेकप कैम्प' के उद्घाटन अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कृष्णकांत कोंडलेकर, तुकाराम चौधरी,शिवसेना शहर प्रमुख, ब्र.कु. अल्का, शिल्पा बहन व डॉ. भारती।

नगर भरतपुर। मातेश्वरी जगदम्बा जी के स्मृति दिवस पर मातेश्वरी जी को श्रद्धा सुमन अर्पित करने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में रमन लाल सैनी,नगर पालिका अध्यक्ष, बद्रीप्रसाद भाई,उपाध्यक्ष, मनोज कटारा,ई.टी.वी. राजस्थान, बृजेन्द्र सैनी,कवि, विष्णु कुमार, ब्र.कु. हीरा तथा अन्य।

कोरवा। मातेश्वरीय जगदम्बा जी के स्मृति दिवस पर आयोजित स्नेह मिलन व परिचर्चा कार्यक्रम में मंचासीन हैं सांसद बंशीलाल महतो।

पाटन-गुज.। श्रीकृष्ण, सुभद्रा व बलराम के बाल स्वरूप की सुंदर झाँकी निकाली गई, जिसके अंतर्गत उपस्थित हैं ब्र.कु. नीलम तथा अन्य भाई बहनें।

रक्षाबंधन.....पेज 11 का शेष

प्रारंभ किया है। इस पर्व के पीछे यही संदेश है कि व्यक्ति को समान पवित्रता सर्व प्राणियों के प्रति धारण करनी चाहिए। इससे ही वह सोलह कला सम्पन्न, सम्पूर्ण सतोप्रधान बन सकता है। क्योंकि जब तक अपवित्रता का दाग है तब तक न तो वह सम्पूर्ण हो सकता है और न ही आसुरी संस्कारों से अपनी रक्षा कर सकता है। इसका महात्म्य भूलने के कारण ही आज भाई-बहन के रिश्ते पर भी उंगली उठने लगी है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में रक्षाबंधन की आवश्यकता: वर्तमान परिवेश में मानवीय मूल्य और मर्यादायें तार-तार हो रही हैं। अपवित्रता का साम्राज्य होने के कारण चारो तरफ हिंसा और व्यभिचार का बोलबाला है। मनुष्य ही मनुष्य की मर्यादाओं को तोड़ने पर आमादा है। एक-दूसरे की रक्षा तो दूर, एक-दूसरे का शील भंग करने को महान दानव अपना पैर पसार चुका है। आज कोई भी इस दानव से सुरक्षित नहीं है। संसार में सर्वश्रेष्ठ कहे जाने वाले मानव के राज्य में ऐसी घटनाएं हो रही हैं जिसकी कल्पना करना कठिन है। आतंकवाद, भ्रष्टाचार, हिंसा, बलात्कार, अत्याचार जैसी भयानक स्थितियों ने सामाजिक व्यवस्था तथा एकता के सूत्र को खण्ड-खण्ड में तोड़कर रख दिया है। इन सभी मानवीय विभीषिका का दोषी खुद मनुष्य है। आज न तो सच्चे ब्राह्मण रहे और न ही रक्षाबंधन की शक्ति। इसलिए अब पुन: समय की मांग है कि रक्षाबंधन के महात्म्य को जान इसे अपने जीवन में दृढ़ संकल्प से अपनायें तभी हमारे अंदर छिपे उन आसुरी विकारों से हमारी रक्षा हो सकती है जो हमें बुरा कार्य करने के लिए प्रेरित करते हैं।

रक्षाबंधन पर्व पर ईश्वरीय संदेश: पुन: भाई-बहन के पवित्र रिश्ते को पुनर्स्थापित करने, एक श्रेष्ठ और मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना करने, सद्भाव पूर्ण संसार की रचना, पूरे विश्व को एकता के सूत्र में बांधने तथा सर्व मनुष्यात्माओं को पवित्रता के संकल्प में बांधकर सच्चे-सच्चे ब्राह्मण बनकर हर एक को इसकी पहल करने का ईश्वरीय संदेश है। परमात्मा शिव पुन: अवतरित होकर अपने दिव्य कर्मों द्वारा ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग की शिक्षा से सच्चे-सच्चे ब्राह्मणों की रचना कर रहे हैं। हम सभी मनुष्यात्मायें एक शिव पिता की संतान आपस में भाई-बहन हैं इसलिए हमें एक-दूसरे की पवित्रता की रक्षा के लिए इस रक्षाबंधन को अपने पवित्र रहने और दूसरों को प्ररित करने के दृढ़ संकल्प के साथ बांधने की आवश्यकता है। यह परिवर्तन का समय चल रहा है। आसुरी दुनिया समाप्त होकर दैवी दुनिया के आगमन का समय है इसलिए हम परमात्मा द्वारा दिए जा रहे पवित्रता के इस प्यारे बंधन को समझकर अपने जीवन में उतारते हुए एक ऐसे समाज की स्थापना में मददगार बनें जहाँ सिर्फ पवित्र रिश्तों का साम्राज्य हो। इस दृष्टिकोण से रक्षाबंधन का पर्व मनाने की आवश्यकता है तभी इसकी सार्थकता है। भाई-बहन के त्योहार रक्षाबंधन का यही ईश्वरीय संदेश है। तो आइये, इस पवित्र पर्व पर संकल्प लें कि हम परमपिता परमात्मा की संतान पवित्र रहकर परमात्मा की आशाओं को पूरा करते हुए इस पर्व को मनायेंगे।